कंप्लेंट से कंप्लीट की ओर ले जाने वाले दिव्य मंत्र...

ऐसा भी समय आयेगा जहाँ शिकायत ही न हो! कंप्लेन कल्याण के भाव में बदल जाये! कंप्लेन होती ही तब है जब हमें सम्पूर्ण ज्ञान का अभाव होता है। पूर्ण भरा हुआ पानी का घड़ा कभी आवाज़ नहीं करता। शिकायत क्यों होती है, इससे हम किस तरह से बच सकते हैं, उसी सम्बन्ध में परमात्मा हमें बहुत ही स्नेह भरी शिक्षा देकर समझाते हैं कि यह संगम का समय बाप और बच्चों के सर्वश्रेष्ठ मिलन का है। ये मिलन ही सम्पूर्ण शिकायतों पर पूर्ण विराम लगा देता है। फिर भी बाबा कहते हैं कि संगम की यात्रा में चलते-चलते खुद की कमियां या परिस्थितियां आने पर दूसरों को या भाग्य को दोष देते हैं लेकिन बाबा कहते हैं कि शिकायत करना कमज़ोर आत्मा की निशानी है जबकि सम्पूर्णता की ओर बढ़ना मास्टर सर्वशक्तिवान का लक्षण है। कहते हैं ना जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ बात नहीं, शिकायत नहीं।

1. शिकायत(कंप्लेंट) क्यों पैदा होती है?

शिकायत तब पैदा होती है जब हमारी नज़र दूसरों के दोषों पर होती है या जब हम स्वयं को परिस्थितियों से छोटा समझने लगते हैं।

परचिंतन: जब हम सोचते हैं कि "उसने ऐसा क्यों किया?" या "यह मेरे साथ ही क्यों हुआ?", तो हम अपनी शक्ति गँवा देते हैं।

अपेक्षाएँ: दूसरों से सम्मान या सहयोग की उम्मीद रखना ही शिकायतों की जड़ है। बाबा कहते हैं कि शिकायत करने वाला व्यक्ति कभी भी संतुष्ट नहीं रह सकता और न ही दूसरों को सुख दे सकता है।

2. कंप्लीट बनने का अर्थ क्या है?

संपूर्ण या कंप्लीट बनने का अर्थ है- संतुष्टता। ऐसी अवस्था जहाँ न स्वयं से कोई शिकायत हो, न दूसरों से और न ही ड्रामा से।

सम्पन्नता: जब मन में बाबा की याद और शक्तियों का खज़ाना भरपूर होता है, तो कमी महसूस नहीं होती। जहाँ कमी नहीं, वहाँ कोई शिकायत नहीं।

स्वीकार करना: हर परिस्थिति और हर व्यक्ति के संस्कार को 'ड्रामा' का हिस्सा मानकर स्वीकार करना ही सम्पूर्णता की ओर पहला कदम है।

3. शिकायत से बचने के उपाय

बाबा हमें 'कंप्लीट' बनने के लिए कुछ विशेष सावधानियाँ देते हैं: "क्यों" को 'बिंदी लगाओ"। "क्यों" एक टेढ़ा सवाल है जो शिकायतों का अंबार लगा देता है। बाबा कहते हैं कि हर बात में 'कल्याण' देखो और फुल स्टॉप(बिंदी) लगाओ।

स्व-परिवर्तन पर ध्यान: दूसरों को बदलने की कोशिश करेंगे तो शिकायतें बढ़ेंगी, खुद को बदलेंगे तो दुनिया बदल जाएगी।

बेहद की दृष्टि: जब हम खुद को आत्मा और दूसरों को भी बाबा की संतान(भाई-भाई) समझते हैं, तो घृणा या शिकायत के भाव स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

4. विधाता और वरदाता को याद करो

बाबा कहते हैं कि तुम बच्चे 'विश्व कल्याणकारी' हो। क्या एक दाता या कल्याणकारी कभी शिकायत कर सकता है? हमें देने वाला बनना है, माँगने वाला नहीं। जब हम मास्टर विधाता बनकर सबको दुआएं देते हैं, तो हमारा 'कंप्लेंट' का खाता समाप्त हो जाता है और 'सम्पूर्णता' का खाता जमा होने लगता है। जैसे ब्रह्मा बाबा को हमने देखा कुछ भी परिस्थितियां आईं लेकिन वे कभी भी विचलित नहीं हुए। क्योंकि विश्व कल्याणकारी का भाव उनकी रग-रग में समाया हुआ था।

5. समय की पुकार: 'नो मॉर एक्सक्यूज़(कोई बहाना नहीं)'

अब समय बहुत कम है। बाबा कहते हैं कि यदि अब भी हम छोटी-छोटी बातों की शिकायतें लेकर बैठेंगे, तो 'सम्पूर्ण फरिश्ता' कब बनेंगे? माया हमें परिस्थितियों के बहाने देगी, लेकिन हमें उन बहानों को अपनी शक्ति से खत्म करना है।

शिव बाबा हमें 'कंप्लेंट मुक्त'(शिकायत मुक्त) और कंप्लीट(संपूर्ण) बनाने के लिए विशेष स्वमान का अभ्यास कराते हैं। जब हमारा स्वमान जाग्रत होता है, तो अभिमान और शिकायत स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

यहाँ बाबा द्वारा दिए गए 6 मुख्य स्वमान हैं जो आपको हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहने में मदद करेंगे:

1. "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ" 2. " मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ" 3. "मैं सदा संतुष्टमणि आत्मा हूँ" 4. "मैं अचल-अडोल आत्मा हूँ" 5. "मैं मास्टर विधाता और वरदाता हूँ"
6. "मैं कम्बाइड स्वरूप आत्मा हूँ"

शिकायत करना समय को व्यर्थ गँवाना है, जबकि सम्पूर्ण बनना समय को सफल करना है। बाबा के हाथ में हाथ देकर हर परिस्थिति को एक 'पेपर' की तरह समझें और उसे पास करें। जैसे ही आप 'शिकायत' छोड़ते हैं, परमात्मा के वरदानों के द्वार आपके लिए खुल जाते हैं।

तो आइए, आज से हम संकल्प करें कि हमारे मुख पर न किसी व्यक्ति की शिकायत होगी, न प्रकृति की और न ही प्रारब्ध की। हम बाबा की श्रीमत पर चलकर 'कंप्लीट और परफेक्ट' बनेंगे।

मन के मालिक बन मन को चलाओ, साथ-साथ सबको सन्देश देकर मुक्ति का वर्सा दिलाओ...

आजकल बाबा मन के ऊपर विशेष अटेन्शन दिला रहा है, मन को बिजी रखो, इसके लिए बाबा कहते हैं मन्सा सेवा करो। कर्म करते हुए भी ऐसा कोई हल्का काम होता है तो आप मन्सा सेवा कर सकते हैं क्योंकि मनमनाभव की ही मुख्य बात है। तो एक मन्सा सेवा में बिजी रहो, दूसरा बाबा कहते हैं सन्देश देने में बिजी रहो। इससे कोई भी धर्म की आत्माएं हैं, उनको लगेगा कि यह हमारे हैं। सबको मुक्ति तो मिलनी ही है। तो मुक्ति प्राप्त करने वाले भी बाबा से ही तो वर्सा लेंगे! बाबा दिलाएंगे तो हमारे द्वारा ही ना! तो यह वर्सा सभी को दिलाओ, नहीं तो आपको उल्हना मिलेगा।

कई बच्चे समझते हैं अभी विनाश की डेट तो कोई जल्दी दिखाई नहीं देती है। लेकिन सन्देश दे तो रहे हैं, देते रहेंगे। अगर पीछे सन्देश देंगे तो वो आपको कहेंगे कि आपने हमारे को बहुत धोखा दिया, क्योंकि हमको अगर आप पहले बताते तो हम भी कुछ पद तो पा लेते। लेकिन आपने अभी ऐसे टाइम पर बताया है जो अहो! प्रभु आपकी लीला अपरंपार... तो आपको उल्हना मिलेगा। इसीलिए बाबा कहते हैं अभी जल्दी-जल्दी सबको मुक्ति का वर्सा दिलाओ, कोई का उल्हना न रह जाए। तो बाबा चाहता है कि बच्चे अभी मन के मालिक बन करके मन को चलाएं। कितना समय मेरा मन ऑर्डर मानता है, कितना समय नहीं मानता है? अगर नहीं मानता है तो मालिक कमज़ोर हुआ इसलिए हम सभी इकट्ठे हुए हैं। तो सभी एक तो दृढ़ संकल्प करो, दूसरा सभी अपने ऊपर भी अटेन्शन रखो, कोई भी पेपर आवे उसमें भी सदा खुश। बाबा यही चाहता है कि हरेक बच्चा बेफिकर रहे। बाबा की दिलतख्तनशीन आत्मा हूँ, इस नशे में रहें।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

डबल सन्यासी बन, डबल सर्टिफिकेट लेना है

हम आप सबने इस प्यारे संगमयुग पर अपने आपको मीठे बाबा के आगे समर्पित किया। सिर्फ मन्सा या बुद्धि से नहीं परन्तु प्रैक्टिकल में अपनी जीवन को हथेली पर रखकर बाबा के आगे अर्पित कर दिया। सन्यासी सन्यास करते उनके मन में वैराग वृत्ति होती, वह अलग बात है। आप सब बेहद के डबल सन्यासी हो, डबल सर्टिफिकेट लेने वाले हो। आप सबको इस संगम का डबल सौभाग्य मिला हुआ है। आपका इस ड्रामा में डबल पार्ट है, डबल कमाई है, डबल लॉटरी है, डबल पालना है क्योंकि आप डबल सेवाधारी हो। आप अपने को दृढ़ करके महावीर बन युद्ध के मैदान पर आये हो।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

आप सबका महान त्याग है। जिस घड़ी अपने आपको अर्पित किया- तो यह दृढ़ संकल्प किया कि ओ बाबा हम आपके घर में मर मिटेंगे परन्तु हटेंगे नहीं। सदा विजयी बनेंगे कभी हारेंगे नहीं। आपके द्वार पर हम अपना श्वास-श्वास सफल करेंगे। कहाँ भी अपना श्वास व्यर्थ नहीं गँवाएंगे। हर कदम पर आपका आज्ञाकारी बनकर रहेंगे। कदम-कदम श्रीमत पर चलेंगे। तो आप सब हो महान त्यागी। पाण्डवों का यह त्याग शक्तियों से भी बड़ा है। शक्तियां अनेक हैं, पाण्डव विरले हैं। आप सब देह-अभिमान छोड़कर निर्मान सेवाधारी बनें - तो आपकी मार्क्स शक्तियों से भी ज़्यादा है इसलिए पाण्डवों का पति पाण्डवों का साथी है, शक्तियों का रखवाला है। शक्तियों को उसने आगे रखा, यह उनकी बलिहारी है, थैंक्स है। लेकिन पाण्डवों का सदा साथी है इसलिए आप सब महान हो। जिन्होंने यह दिल में संकल्प किया कि हमें मोल्ड होकर रहना है, मुड़कर पीछे नहीं देखना है, यह सब मार्क्स आप सबको एक्स्ट्रा मिल रही हैं।

प्रवृत्ति में रहने वाले सीढ़ी चढ़ने के बाद उतरते हैं परन्तु आप लोगों ने अपने को सिद्ध किया कि हम बाल ब्रह्मचारी बाबा के बच्चे हैं। यह बाल ब्रह्मचारी रहना भी रिकॉर्ड है। आप लोगों ने दृढ़ संकल्प किया कि हमें सीढ़ी चढ़नी ही नहीं है, और जो चढ़ चुके हैं उनको देखना भी नहीं है। यह भी बहुत बड़ा त्याग है तो आप डबल त्यागी हैं। अगर वह चढ़ी हुई सीढ़ी देखने में आती तो पूरे त्यागी नहीं। देखनी भी नहीं है यह मंज़िल। दिखाई पड़ती है तो यह कमी है। अगर चढ़ी हुई सीढ़ी दिखाई पड़ती, वह संकल्प भी आता तो समझो हम अभी तक ज्ञानी व योगी तू आत्मा की स्टेज से दूर हैं इसलिए यह सर्टिफिकेट लेना है कि हम कोई देहधारी को देखते नहीं। हमारे इन नयनों में एक बाबा की ही ज्योति जगती। तो अपने आपको चेक करो कि मुझे कोई भी हस्ती सूक्ष्म में भी आकर्षित करती है? या मैं सर्व आकर्षणों से परे आकर्षित रूप हूँ। मेरी बुद्धि कहाँ किसी पर सूक्ष्म में भी आकर्षित तो नहीं होती? मिसाल बताते हैं कि लक्ष्मण ने 14 साल सीता के साथ वन में बिताया परन्तु उसने सीता के अंगूठे के सिवाए उसको कभी देखा ही नहीं। यह भी मिसाल है, ऐसे नहीं कि उसने देखा ही नहीं परन्तु देखते भी नहीं देखा। तो जब हमारे चन्द्रवंशी क्षत्रिय घराने का लक्ष्मण कहता कि हमने कभी सीता को देखा ही नहीं, तो हम सूर्यवंशी में आने वाले कैसे कह सकते कि हमें कोई दिखाई पड़ता! अगर कोई दिखाई पड़ता तो समझो मैं द्वापर वाला हूँ न कि सूर्यवंशी हूँ। यही है सबसे पहली मंज़िल।

दूसरों को देखने की बजाए बाबा ने जो किया वह करते चलो

हर पल जिसको बाबा की याद है, वो कहाँ रहते हैं? बाबा की पलकों में। भगवान का प्यार कितना वन्डरफुल है! इतना प्यार जो भगवान अपनी पलकों में बिठा दे। सारा दिन बुद्धि में ज्ञान टपकता रहे अर्थात् सारा दिन ज्ञान का चिंतन चलता रहे।

एक बाबा का प्यार, दूसरा परिवार से प्यार। परिवार से प्यार मांगो नहीं, मांगने से नहीं मिलेगा। बाबा से प्यार मिला तो यहाँ आ गये। बाबा को देख करके बी.के. बन गये। पता नहीं था कि इतनी परीक्षायें आयेंगी, परन्तु भेंट नहीं करते हैं, दुनिया में कितनी परीक्षायें आती हैं। यहाँ की परीक्षा में घबरा जाते हैं, दुनिया में एक-एक के अन्दर का हाल तो पूछो, बिचारों का क्या हाल है? उसकी भेंट में यहाँ कुछ भी परीक्षा नहीं है।

परिवार से प्यार पाने के लिए आप खुद ज्ञान स्वरूप, शान्ति स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनो। यह फाउण्डेशन जिसका जितना मजबूत है तो वो प्यार मांगता नहीं है। मांगने वाला प्यार आर्टिफिशियल है। ऑटोमेटिक ईश्वर जितना प्यार कोई दे नहीं सकता। मैं हमेशा अपने से पूछती हूँ मेरे जीने का उद्देश्य क्या है? मेरी पर्सनल लाइफ में क्या फायदा है? और मेरे से औरों को क्या फायदा है? ब्रह्मा बाबा की पर्सनल लाइफ में तो हमने रोज़ नवीनता देखी, अव्यक्त स्थिति देखी। अभिमान का अंश नहीं था। प्यार तो हर बच्चे के साथ था, पर अटैचमेन्ट नहीं था। जो कुछ हुआ ड्रामा पूरा हो गया। कोई सीन सामने आयी तो नथिंग न्यू, ब्रह्मा बाबा की इतनी अचल-अडोल अवस्था देखी। बाबा को हर समय तपस्या में देखा, त्यागी नम्बरवन। सिम्पल और सच्चा रहना- यह ब्रह्मा बाबा ने प्रैक्टिकल सिखाया। उसने कहा तुमको ऐसा बनना है, इसको फॉलो करो। और इसने कहा ऐसा बनना है तो उसको याद करो। तो प्रैक्टिकली साकार बाबा से हमको जो मिला है वही आज भी मैं याद करती हूँ, वही करती हूँ।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हर संकल्प और श्वास में बाबा के सिवाए और कोई की बात याद आती नहीं। देखो, कमाल ऐसी याद करना नहीं पड़ता है, बाबा को देखा तो और कुछ याद आता नहीं है। ड्रामा में अभी जो सेवा हुई फिनिश। अपने स्मृति स्वरूप से याद दिलाने की पालना दी है, सेवा नहीं की है। प्राप्ति बता रही है पालना, पढ़ाई कैसे की है? प्राप्ति बताती है कि मुझे पालना किसकी मिली है? ईश्वरीय पढ़ाई जो पढ़ी है, जो सुना है, समाया है वो जीवन में आया है। हमारे जीवन के अनुभव से औरों को मिल रहा है। वन्डर है, यह प्राप्ति कितनी है? तो अनुभव ऐसा हो जो अनेक आत्माओं को उस अनुभव की शक्ति मिलती रहे।

हर रोज़ की मुरली में बाबा कुछ ऐसा सीखा देता है, हमारा बेड़ा तो बाबा ने पार किया परन्तु अभी हमारे संग में जो आवे, वो भी इस सच की नईया में बैठे तो उनका भी बेड़ा पार हो जाये। बाबा के गुण गाते हँसते-हँसते यह जीवन बीते। जो बाप की महिमा है वो बच्चों की होनी चाहिए, तो बाबा की महिमा करते-करते, उसको देखते-देखते उस जैसा बनेंगे। बाबा महिमा चाहता नहीं है पर अनेक आत्माओं को जब प्राप्ति होती है तो उसके दिल से महिमा निकलती है। तो अब कोई व्यर्थ बात सुनने की ज़रूरत नहीं है। हाँ, बाबा के जो बोल हैं वो बोल सकते हैं बाकी तो कुछ बोलना ही नहीं आता है। सुनने वाले थकते नहीं हैं, यह भी मेहरबानी है। अगर हमारे में ज़रा भी अभिमान होगा तो कोई सुनेगा नहीं।